B - IV
L-2
Economy

National Income and Product (राष्ट्रीय आय एवं उत्पाद)

अर्थव्यवस्था क्या है ⇒

अर्थव्यवस्था कोई भी एक भौगोलिक क्षेत्र होता है जिसमें उपलब्ध संसाधनों से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाता है तथा उनका वितरण लोगों में किया जाता है ताकि उनकी आवश्यकता पूरी हो सके और उन्हें आर्थिक कल्याण प्राप्त हो सके।

इसे एक चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है-

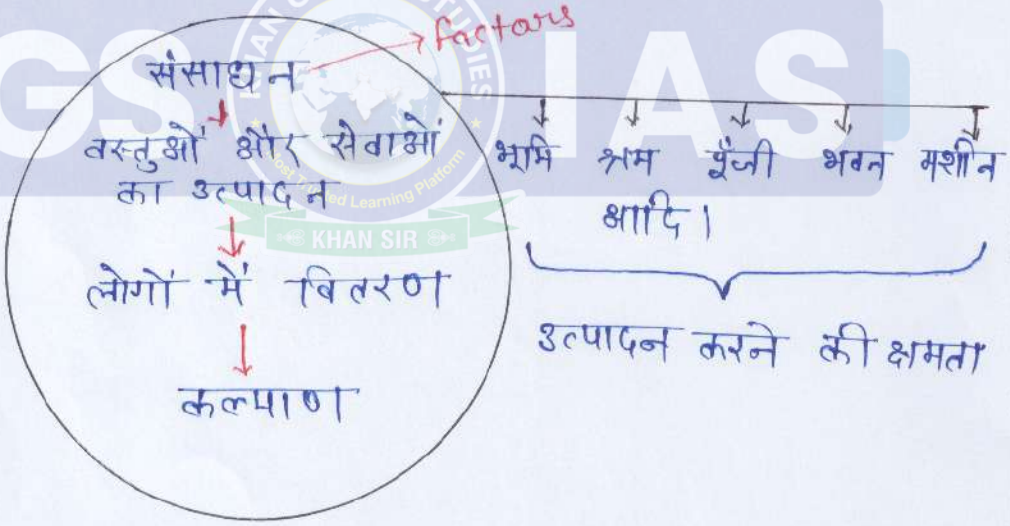

MICRO & MACRO Economics (व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र)

व्यष्टि अर्थशास्त्र में किसी एक आर्थिक निर्णयकर्ता के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जैसे कि एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक श्रमिक आदि।

उपर्युक्त के विपरीत समाष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का समग्र अध्ययन किया जाता है। इससे उन विषयों की चर्चा की जाती है जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से जुड़े होते हैं जैसे GDP, रोजगार, मुद्रास्फीति आदि।

यह ध्यान देने योग्य है कि समाष्टि अर्थशास्त्र को समझने के लिए व्यष्टि अर्थशास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

राष्ट्रीय आय और उत्पाद से जुड़ी महत्वपूर्ण अवधारणाये :-

1. GDP - सकल घरेलू उत्पाद :-

एक देश की घरेलू सीमा में एक वर्ष में उत्पादित होने वाली सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्यों के समग्र योग को GDP कहते हैं।

GDP की उपरोक्त परिभाषा को ध्यान में रखते हुए इसकी कुछ मुख्य बातो को निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है -

(i) GDP निकालते समय इस बात को ध्यान में रखा जायेगा कि केवल उसी उत्पादन

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

को सम्मिलित किया जायेगा जो देश की घरेलू सीमा में हुआ हो, हालांकि इसके कुछ अपवाद भी हो सकते हैं जैसे कि राजदूत कार्यालय आदि।

इसी प्रकार, यदि किसी देश के साधन ('लोग') अन्य राष्ट्रों की घरेलू सीमाओं में कार्य करते हो तो उनके द्वारा किया जाने वाला उत्पादन मूल राष्ट्र जैसे भारत की जी.डी.पी सम्मिलित नही होगा।

(ii) GDP की गणना में केवल अंतिम (वस्तुओं और सेवाओं) को ही सम्मिलित किया जाता है ताकि दोहरी गणना से बचा जा सके।

अंतिम वस्तु ऐसे वस्तु होते हैं जिनका परिवर्द्धन नहीं किया जा सकता है जैसे कि - स्मार्टफोन इत्यादि।

इसको एक उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है -

गेहूँ	आटा	ब्रेड	
↓	↓	↓	
10	12	20	= 20
Value addition	2	8	= 20

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

यदि अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बजाय सभी वस्तुओं और सेवाओं को जी.डी.पी की गणना में सम्मिलित करना हो तो इसका एक विकल्प हो सकता है कि उत्पादन की अलग-अलग अवस्थाओं पर किए गए Value addition (मूल्य संवर्द्धन) को आपस में जोड़ लिया जाए।

यह ध्यान देने योग्य है कि भारत के द्वारा SNA – 2008 के मानकों के अन्तर्गत जी.डी.पी निकालने के लिए 2015 में इस विधि के अन्तर्गत लागू किया गया था। (UPSC mains – 2021)

इस विधि के अन्तर्गत GDP पर जाने के लिए GVA (Gross Value Addition) को मुख्य रूप से आधार बनाया जाता है।

KGS IAS